# वायरसों के साथ सह अस्तित्व

**पी. बालाराम**

एड्स का पहला ब्यौरा 1981 में सामने आया था। 1984 तक यह स्पष्ट हो गया था कि एड्स का कारक एक रिट्रोवायरस है। इसे एच.आई.वी. नाम दिया गया। दो दशकों तक एड्स सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी चर्चाओं के केंद्र में रहा। कई मर्तबा तो ऐसा भी हुआ है कि एड्स के संभावित असर के चलते लोगों का ध्यान उन आम बीमारियों से हट गया जो कहीं ज़्यादा व्यापक हैं। इस वजह से इन बीमारियों पर खर्च होने वाला धन भी एड्स में खप गया।

1988 में नोबल विजेताओं के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए जोशुआ लेडरबर्ग ने कहा था - "एड्स की बढ़ती महामारी ने दुनिया को हिला दिया है। आम तौर पर अभी यह नहीं समझा गया है कि यह एक कुदरती, लगभग पूर्वानुमान योग्य घटना ही है। हमें ऐसे संकटों का सामना आगे भी करना होगा और यदि हम प्रकृति में अपनी प्रजाति के स्थान की वास्तविकताओं पर पकड़ नहीं बनाते, तो हम ऐसे संकटों से निपटने में और भ्रमित होंगे।" लेडरबर्ग ने हमारे और सूक्ष्मजीवों के परस्पर सम्बंध की समस्या को काफी स्पष्टता से सामने रखा था - "मानव बुद्धि, संस्कृति और टेक्नालॉजी ने शेष लगभग समस्त वनस्पति व जंतु प्रजातियों को प्रतिस्पर्धा में बहुत पीछे छोड़ दिया है। मगर हम इस बात को लेकर मुगालते में हैं कि हम सूक्ष्मजीवों पर राज कर सकते हैं। बैक्टीरिया और वायरस किसी राष्ट्रीय सरहद को नहीं पहचानते। इस कुदरती विकास की प्रतिस्पर्धा में यह कतई ज़रूरी नहीं कि विजेता हम ही रहें।"

1980 के दशक में, जब एड्स का भय चरम पर था, तब व्यक्त किए गए लेडरबर्ग के ये विचार आज और भी प्रासंगिक हैं जब एक और वायरस जन्य रोग सार्स हमारे सिर पर है। ऐसा प्रतीत होता है कि सार्स चीन के दक्षिणी प्रांत गुआंगडोंग से उभरा है। इसका पहला शिकार हांगकांग में दिखाई पड़ा। सार्स के लक्षण लगभग इंफ्लुएंज़ा के समान होते हैं और यह हवा से फैलने वाला रोग है। आज की दुनिया में सार्स तेज़ी से सुदूर पूर्व और उससे भी आगे तक फैल गया है। अमरीकी क्षेत्र में यह टोरंटो में देखा गया है। इस रोग की तेज़ रफ्तार दरअसल हवाई यात्राओं की वजह से संभव हुई है। संक्रमित व्यक्ति वायरस का भण्डार बन जाता है और फिर अपने साथ वायरस को भी देश-विदेश की सैर करवाता है।

सॉर्स की महामारी काबू में है। इसका श्रेय मूलतः दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में अपनाए गए कठोर स्वास्थ्य उपायों को जाता है। इन देशों का सख्त अनुशासन और संगठनात्मक तंत्र शायद अन्य विकासशील देशों में उपलब्ध न हो। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि सार्स के सम्बंध में जीव वैज्ञानिकों व चिकित्सा वैज्ञानिकों ने जिस तेज़ी से काम किया है, उससे पता चलता है कि आधुनिक जीव वैज्ञानिक अनुसंधान के पास कितने शक्तिशाली साधन उपलब्ध हैं। सार्स के प्रथम मरीज़ फरवरी के अंत में पहचाने गए थे। 31 मार्च को हांगकांग के शोधकर्ताओं ने रिपोर्ट दी कि सार्स संक्रामक लगता है और इसका सूक्ष्मजीव कारक अस्पष्ट है। एक सप्ताह बाद 138 मरीज़ों के शारीरिक लक्षण, प्रयोगशाला की रिपोर्ट तथा रेडियोलॉजिकल रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। इसके 10 दिन के अन्दर सार्स के कारक जीव को एक नए कोरोना वायरस के रूप में पहचान लिया गया।

इस वायरस की पहचान की खबर देते हुए जो शोधपत्र छपे उनके लेखक अटलांटा, हनोई, सिंगापुर, सैन फ्रांसिस्को, ताइपे, हांगकांग, बैंकॉक, हैम्बर्ग, फ्रैन्कफुर्ट, मार्बुर्ग, पैरिस और रॉटरडम के संस्थानों से सम्बंध थे। यह उपयोगी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का जीता-जागता प्रमाण है। सार्स वायरस की पहचान होने के तीन सप्ताह के अंदर उसके पूरे जीनोम की शृंखला दो अलग-अलग समूहों ने प्रकाशित कर दी। यह किसी भी ऐसे ज्ञात वायरस की शृंखला से भिन्न है। इसका मतलब है कि यह जीव वैज्ञानिकों को अभी काफी समय व्यस्त रखेगा।

सार्स वायरस को समझने की गति बहुत तेज़ रही है। इससे नेटवर्किंग व सहयोग की उपयोगिता समझ में आती